मैथिली 'प्रतिष्ठा
बी० ए० (आनर्स) पार्ट-I
पेपर-I
Notes

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक-03-04-2020

1. मैथिली प्राचीन गीतावलीक विशेषता:-

मैथिलीक प्राचीन कविगणक, प्राचीन पाण्डुलिपि सभ जे अप्रसारित छल, तकरा सभकेँ ताकि-ताकि ओकरा संकलन क' प्रकाशित कयल गेल। एहि कालक सभ कविक रचना गेयात्मक शैलीमे छल। एहिकालक कवि छलाह - विद्यापति, अमृतकर, गजसिंह, दशावधान, सिद्धनरसिंह मल्ल, गोपीनाथ आदि-आदि।

प्राचीन कालक रचना सभकेँ नेपाल, तरौनी पदावली, रामभद्रपुर पदावली, रागतरंगिणी, राग-भजन संग्रह, बंगाल, आसाम आदिसँ संग्रह कयलनि।

एहि कालक रचना सभकेँ खोज करैत जे भेटल आ ओकर पाछमे कवि, भनितामे नामोल्लेख देखि पंजीसँ ताकिक' परिचयक संग उपस्थापित कयल गेल अछि।

प्राचीन गीतावलीक रचना सभपर संस्कृतक तत्सम शब्दक अतिरिक्त प्राकृत आ अवहट्टक प्रभाव छल तेँ विद्यापतिक गीत छोड़ि आन-आन कविक रचनाक अर्थ जनसाधारणक बुझवामे नहि अबैत छल। एहि कालक कविगण सामान्य जन-जीवन आ जन-भाषा सँ हटल रहैत छलाह। ओ त्योकनि अपन राजा-महाराजाक भाव-विचारक पुष्टि करबामे लागल रहैत छलाह। कारण ओ त्योकनि कोनेने कोनो राजाक आश्रयमे रहैत छलाह।

दिनांक - 03-04-2024

Notes

अपन आश्रयदाताक प्रसन्न रखबाक लेल रचना करैत छलाह। यैह कारणेँ प्राचीन काव्यमे जन-जीवनक चित्रण नहि भेरैत अछि। एहि कालमे किछु राजा-महाराजा लोकनि अपन प्रियतमक नेहमे सेहो रचना कयलनि। संगहि रचनामे राधा-कृष्णक प्रेमक उत्प्रेक्ष सेहो रहैत छल।

प्राचीन गीतक सभसँ पैघ विशेषता अछि जे विद्यापतिक गीतक अनुशरण कयल गेल अछि। एहि गीतमे शृंगारिक आकर्षण, पदक लालित्य, भाषा-भाव सभमे समानता देखबामे अबैत अछि। वस्तुतः विद्यापति मात्र कविये टा नहि छलाह ओ युग श्रष्टा सेहो छलाह। ओ जे अपन काव्यक गीतमात्रामे द्वार बहओलनि ताहि प्रवाहमे तत्कालीन सभ कविगण ऊब-डूब करैत छलाह।